साहित्य अकादेमी
महत्तर सदस्यता
SAHITYA AKADEMI
FELLOWSHIP

अमृता प्रीतम

AMRITA PRITAM

अमृता प्रीतम
AMRITA PRITAM

लब्धप्रतिष्ठ पंजाबी कवयित्री और कथा-लेखिका अमृता प्रीतम, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपनी महत्तर सदस्यता से विभूषित कर रही हैं; संभवतः एकमात्र आधुनिक पंजाबी रचनाकार हैं जिन्होंने साहित्य रचना के क्षेत्र में अपने कलात्मक उत्कर्ष को निरंतर बनाए रखा है। विभाजन के पहले और बाद के उथल-पुथल के दौर में पंजाब में रहते हुए और तत्पश्चात् तेज़ी से बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक युग को जीते हुए आपने अपने समय को अपनी रचनाओं में ईमानदारी से उतारा है और अपनी कविताओं, उपन्यासों और कहानियों द्वारा उन्हें स्वर दिया है। आपको पंजाबी साहित्य में आधुनिकतावाद की पुजारिन वैसे ही नहीं कहा गया। आपने पंजाबी लेखन से अपनी रचनाधर्मिता का शुभारंभ किया, लेकिन विभाजन के बाद दिल्ली आने पर आप हिन्दी में भी लिखने लगीं।

आपका जन्म 31 अगस्त 1919 को गुजराँवाला (अब पाकिस्तान) में हुआ। अपने विद्वान पिता के कुशल निर्देशन में आपने कविताएँ लिखनी शुरू कीं। आप आल इंडिया रेडियो (अब रेडियो लाहौर) से संबद्ध रहीं और बाद में 1938 में आप आकाशवाणी, दिल्ली में आ गईं।

आपकी प्रारंभिक कविताओं में, खासकर आपके पहले दो संग्रहों *ठंडियाँ किरना* (1935) और *अमृत लेहराँ* (1936) में, जीवन के प्रति एक पारंपरिक, सुविचारित और नैतिक दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है। मार्क्सवादी विचारधारा की मानवतावादी अपील आपको एक नए ओर खुले स्पेस की ओर ले गई। परिवर्तन की तीव्र धारा में जीवन और उसके अनुभवों को एक स्त्री की दृष्टि से देखने ने आपकी रचनाओं को एक निश्चित दिशा दी। अपने वैयक्तिक जीवन के संघर्षों से आहत आपके हाथों में स्त्रीवाद एक देसी विषयवस्तु के रूप में विकसित हुआ। आपने लिखा है :

एक दुःख था, जिसे एक सिगरेट की तरह
मैंने ख़ामोशी से पी लिया

राख से गिर पड़ीं केवल कुछेक कविताएँ
जिसे मैंने झाड़ दिया था

पत्थर गीते (1946) की कविताओं के साथ आपकी कविता में विद्रोह का दृढ़ स्वर सुनाई पड़ता है।

विभाजन और उसके बाद जारी सांघातिक घटनाओं ने आपके सर्जनात्मक जीवन पर कठोर यथार्थवाद की समझ की छाप अंकित की। यद्यपि आपने सांप्रदायिक दंगों के लिए धार्मिक कट्टरतावाद और जनोन्माद को दोषी ठहराया, तथापि हमारे राष्ट्रीय इतिहास में आए विध्वंसात्मक बदलावों ने आपकी चेतना पर गहरे निशान छोड़े जो आपकी कई अविस्मरणीय कविताओं के रूप में प्रतिफलित हुए। उन दंगाग्रस्त दिनों में दिल्ली से देहरादून की रेल

Amrita Pritam, the most eminent Punjabi poet and fiction-writer on whom Sahitya Akademi is conferring its Fellowship today, is perhaps the only writer in modern Punjabi literature who has kept up an unmatched record of prolific output and artistic excellence. Living through the turbulent times in Punjab before and after Partition, and then through the fast-changing social and cultural milieu, she has responded honestly to her times and produced astounding results by way of her poems, novels and short stories. She can rightly be termed the high-priestess of Modernism in Punjabi literature. Having begun to write only in Punjabi, she later wrote in Hindi as well, after moving to Delhi following Partition.

Born on 31st August 1919 in Gujranwala (now in Pakistan), Amrita grew up writing poetry under the careful guidance of her scholarly father. She was associated with All India Radio (now Radio Lahore) and later, with AIR, Delhi in 1948.

Her early poems, especially those of her first two collections *Thandiyaan Kirna* (1935) and *Amrit Lehran* (1936) clearly show the patterns of a traditional, well-defined and ethical approach to life. The humanistic appeal of Marxian ideology led her to a new, open poetic space. Looking at life and its experiences from the woman's point of view in the context of strong currents of change gave a definite direction to her writings. Feminism developed as an indigenous theme in her hands, tempered as she became by setbacks in her personal and emotional life. She wrote:

There was a grief I smoked
in silence, like a cigarette

only a few poems fell
out of the ash I flicked from it.

With the poems of *Patthar Geete*,(1946) strong accents of protest emerged in her poetry.

The traumatic events leading up to Partition and continuing thereafter, stamped her creative life with a sense of hard realism. Though she blamed religious fanaticism and mass hysteria for the communal riots, the deep impressions the catastrophic turn in our national history left on her

यात्रा के दौरान लिखी गई 'तो वारिसशाह' कविता *क़िस्सा हीर-राँझा* की 18वीं सदी के निजंधरी कवि का आवाहन करती है, उसे उठ खड़े होने और उन हज़ारों हीरों के बारे में लिखने को प्रेरित करती है जिन्हें अपहृत कर लिया गया, जिनके साथ बलात्कार किया गया और जिन्हें मरता हुआ छोड़ दिया गया। अपनी कच्ची ऊर्जा के साथ यह कविता, आपकी उन रचनाओं में से एक सिद्ध हुई जिसने अमृता प्रीतम को अमर बनाया। अपनी अस्तित्वपरक नियति और सामाजिक पीड़न के ख़िलाफ़ स्त्री की चीख़ आपकी कविताओं में विभिन्न रूपों में दुर्लभ संवेदना और जीवंतता के साथ उभर कर आई है।

सुनेहुड़े आपकी पूर्ववर्ती कविताओं से अलग है। इसमें लेखिका के सृजनात्मक अनुभव में एक उल्लास भरे मौसम का आगमन और विचार एवं अभिव्यक्ति की जटिलता दिखाई पड़ती है। ये कविताएँ, जो प्रेम की ऐन्द्रिक अभिव्यक्ति हैं, 'धरती से अपना संपर्क खोए बग़ैर एक अलौकिक आभा' विकरित करती हैं। जीवन एक पूर्ण परिपक्व फल में 'विकसित होता है' जो अपनी परिपक्वता में गिरने के लिए तैयार है; और सौन्दर्य, जो अपनी स्वयं की दौलत को वहन पर पाने में असमर्थ है, 'उपयोग में लाए जाने के लिए वेदना विह्वल होता है।' प्रेम का कोमल और मधुर अनुभव लौकिक और अनुर्वर पर अधिकार कर लेता है। जो कुछ भी सामाजिक-राजनीतिक अर्थवत्ता इन कविताओं में है, वह सर्जनात्मक अभिप्रायों और रूपकों के साथ स्पंदित होती हैं। ये अमृता प्रीतम की कुछ उत्कृष्ट और अननुवादनीय कविताओं में से हैं।

कस्तूरी (1959) और *नागमणि* (1964) जैसे उनके परवर्ती संग्रहों की कविताओं में 'जीवन की उच्चतर संभावनाओं के लिए प्रयास' दिखाई पड़ता है। *काग़ज़ ते कैनवास* की कविताएँ 'तेज़ी से अमानवीकृत हो रहे युग' के परिप्रेक्ष्य में एक अनुभवातीत विश्वदृष्टि प्राप्त कर लेती हैं। 'गर्भवती' जैसी कविताएँ सुकुमार मनोभावों के साथ लेखन की सहज प्रविधियों से भलीभाँति सम्मिश्रित हैं। अपने 18 संकलनों के साथ एक कवि के रूप में अमृता प्रीतम का क़द अतुलनीय है। एक वरिष्ठ समालोचक के शब्दों में, "संभवतः किसी भी कवि के पास तारों, चंद्रमा, सूरज और आकाश की उतनी छवियाँ नहीं है जितनी अमृता प्रीतम ने अपने काव्य, सपनों और दृष्टि की कशीदाकारी पर बुनी हैं। आचार्य की बात नहीं कि अपनी एक अत्यंत सुंदर कविता में वह स्वयं को एक फुलकारी बुनती स्त्री के रूप में चित्रित करती हैं, प्रकाश की फुलकारी।"

आलोक से फटी हुई फुलकारी को कभी कौन सिएगा?
आसमान के गवाक्ष में सूर्य एक दीप जलाता है।
लेकिन मेरे दिल की मुँड़ेर पर
कभी कौन एक दिया जलाएगा?

एक कथा लेखिका के रूप में भी अमृता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपने 31 उपन्यासों और 20 कहानी-संग्रहों के साथ आप आधुनिक पंजाबी कथा साहित्य की दुनिया को अप्रतिम रूप से विस्तीर्ण करती हैं। अपने उपन्यासों में आप अपने अनुभव विश्व को परस्पर विरोधी चरित्रों, स्थितियों, दृष्टिकोणों, संरचनाओं और अनुभव पैटर्न के साथ एक व्यापक फलक पर चित्रित करती है। वे कृतियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक आनंदप्रद और प्रेरक पाठ बनी हुई हैं। ये उपन्यास अनूदित होकर सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं और आधुनिकतावाद की स्पष्ट पुकार को प्रसारित करने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। 'जलावतन' एक युवक की कहानी है जो अपनी उम्र के हिसाब से अधिक परिपक्व है और वह स्वयं को अपने ही लोगों के बीच अकेला पाता है तथा अपरिवर्तनीय रूप से त्रासदी में बहा ले जाया जाता है। इसे दैनिक जीवन के नितांत मूर्ख यथातथ्यवादियों के मध्य आदर्शवाद की

consciousness came out in the form of several memorable poems. "To Warish Shah", composed during a train journey from Delhi to Dehra Dun in those riot-torn days, invokes the legendary 18th century poet of *Kissa Heer-Ranjha,* exhorting him to arise and write about the millions of Heers abducted, raped, forsaken, dying and dead. This poem, with its raw energy, proved to be one of her early works that served to immortalise Amrita Pritam. The woman's cry against her existential fate and societal abuse breaks out in different forms in her poems of rare charm and vitality.

Sunehure marks a departure from her earlier poems, with the advent of a joyous season in the author's creative experience and a complexity of thought and expression. These poems, mostly sensuous outpourings on love, radiate "an unearthly glory without losing contact with the earth." Life blossoms into "a full-grown fruit ready to fall in its own ripeness" and beauty, unable to bear its own wealth, "aches to be consumed." The delicate and tender experience of love overtakes the mundane and the arid and whatever socio-political significances written into the poems pulsate with creative motifs and metaphors. Those were some of the best poems, and the least translatable, Amrita ever wrote.

In her poems in later collections like *Kasturi* (1959) and *Nagmani*(1964), her strivings for "the higher possibilities of life" are detected. The poems in *Kagaz Te Kanvas* acquire a transcendental worldview and vision in the face of "a fast-dehumanising epoch." Poems like "Garbhavati" exquisitely blend mellowed emotions with equally mellowed modes of writing. With 18 collections, Amrita Pritam's stature as a poet, is incomparable. A renowned critic writes in a tribute to Amrita: "No poet has perhaps as many images of stars, moon, sun and the sky as Amrita has woven into the embroidery of her poetry, dreams and vision. No wonder then, that in one of her exquisite poems she casts herself in the role of a woman embroidering a phulkari, a phulkari of light":

Who will ever stitch a torn phulkari of light?
In the niche of the sky the sun lights a lamp.
But who will ever light a lamp
on the parapet of my heart?

As a fiction-writer too, Amrita is equally eminent. With 31 novels and about 20 collections of short stories, she peerlessly spans the world of modern Punjabi fiction. In her novels, she portrays her experiential world on a wider canvas, with conflicting characters, situations, points of view, structures and patterns of experience. They make delightful and stimulating reading for generation and after generation. These novels, made available in translation in almost all major languages of India, played a crucial role in raising the clarion call of high-modernism. Her *Jala Vatan,* the story of a young man who is too mature for his age and finds himself alienated among his own people and invariably drifts into tragedy, can be seen as an allegory of the inescapable fate idealism comes to, among the crass pragmatists of quotidian life. *Uninja Din* powerfully portrays the resurrection of the

अवश्यंभावी नियति के एक रूपक के रूप में देखा जा सकता है। 'उनिन्जा दिन' एक नियतिवादी मृत्यु आकांक्षा के बरक्श मानवीय विश्वास और प्रेम के माध्यम से संभव पुनरुज्जीवन का प्रभावी अंकन है। *कोरे काग़ज़, हरदत दा ज़िंदगीनामा* आदि उनके कुछ उत्कृष्ट उपन्यास हैं।

अमृता प्रीतम की कहानियाँ अपनी विशिष्ट गहराई और कलात्मक उत्कृष्टता के लिए उल्लेखनीय हैं। 'इक शेहर दे मौत', 'तीसरी औरत' और 'पंज वारेह लंबी सड़क' जैसी कहानियाँ तीव्र प्रभावक्षम और संक्षिप्त हैं और अपने में स्पंदनशील भावावेगों की एक पूरी दुनिया समेटे हुए हैं। आप एक बहुसर्जक कहानीकार हैं लेकिन आपके कवि और उपन्यासकार व्यक्तित्व ने इस क्षेत्र की उपलब्धियों को छुपा दिया है।

गद्य की अन्य विद्याओं में आपकी लगभग 40 कृतियाँ प्रकाशित हैं जिसमें तीन आत्मकथात्मक हैं—*रसीदी टिकट* (1976), *लाल धागे दा रिश्ता* (1989) और *हुज्रे दी मिट्टी*। ये अद्वितीय कृतियाँ हैं। दो कृतियाँ आपके सपनों के बारे में है। आपने ओशो की कृतियों औरा सारा शगुफ़्ता के जीवन पर लिखा है। अफ़जाल तनशीफ की रचनाओं पर आपकी कृति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आप पंजाबी मासिक *नागमणि* की संपादक रही हैं।

आपकी कृतियाँ विश्व की 34 भाषाओं में अनूदित हुई है। हिन्दी में आपकी सभी कृतियों के अनुवाद हुए हैं। अंग्रेज़ी में आपकी 14 कृतियाँ अनूदित हैं। यदि कोई उनकी चुनी हुई रचनाओं की सूची बनाना चाहे तो ये कृतियाँ सहज ही ध्यान में आएँगी—*अमृता प्रीतम की श्रेष्ठ रचनाएँ, चुने हुए उपन्यास* (8 उपन्यास), *चुनी हुई कहानियाँ, चुनी हुई कविताएँ* (सभी हिन्दी में, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली), *कच्चे रेशम की लड़की* (हिन्दी में चुनी हुई कहानियाँ, किताबघर, दिल्ली) *ये कलम ये काग़ज़ ये अक्षर* (हिन्दी में चुनी हुई रचनाएँ, राजपाल एंड संज, दिल्ली), *सलेक्टेड पोएक्स* (अंग्रेज़ी में, भारतीय ज्ञानपीठ), *ए स्लाइस ऑफ़ लाइफ़* (विकास, दिल्ली), *चोनवें पत्रे* (पंजाबी में चुनी हुई रचनाएँ, साहित्य अकादेमी), *मिट्टी दी जात* (पंजाबी में 51 कहानियाँ, नागमणि पब्लिशर्स, दिल्ली), *अमृता विशेष* (गुजराती अनुवाद में चुनी हुई रचनाएँ), *काग़ज़ ते कैनवाज़* (पंजाबी में संकलित कविताएँ)।

आपके जीवन और कृतित्व पर चार फ़िल्में बनी हैं और आपके उपन्यासों एवं कहानियों पर आधारित दस फ़िल्में और टीवी धारावाहिक।

अमृता प्रीतम ने निमंत्रण पर और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रतिनिधि के रूप में नेपाल, यूगोस्वालिया, हंगरी, रोमानिया, बल्गारिया, फ्रांस, नार्वे, रूस और तत्कालीन सोवियत संघ के कई गणराज्यों की यात्रा की है।

1956 में प्राप्त साहित्य अकादेमी पुरस्कार के अतिरिक्त आपको इंटरनेशनल वाप्तसरोव एवार्ड, बल्गारिया का साइरिज एंड मेथोडियस एवार्ड और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। आपको पद्मश्री तथा दिल्ली विश्वविद्यालय, जबलपुर विश्वविद्यालय, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पंजाब विश्वविद्यालय, बंबई विश्वविद्यालय, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता द्वारा डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है। फ्रांसीसी सरकार द्वारा आपको 'ऑफिसर दें/आर्डर दे आर्ट्स ए दे लेटर्स' की उपाधि प्रदान की गई। आपको छह वर्षों के लिए राज्यसभा सांसद नामित किया गया और इस वर्ष पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

भारतीय साहित्य के इस अनूठे एवं करिश्माई साहित्यिक व्यक्तित्व, पंजाब की जीवित किंवदंती, अमृता प्रीतम को अपना सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है।

spirit made possible through human faith and love, against a fatalistic death-wish. *Kore Kagaz*, *Hardat Da Zindaginama* etc. are some of her finest novels. She has also written novels on the lives of the artists Harkrishan and Faiz.

Amrita's short stories are marked by their unusual depth and artistic finesse. Stories like "Ik Shehar De Maut," "Teesari Aurat" and "Panj Vareh Lambi Sarak" are intense, compressed and yet precise, and contain within themselves an entire universe of pulsating emotions. A prolific short-story writer, her stature as a poet and novelist has seemingly overshadowed this side of her achievement.

Her other prose-writings come to nearly 40 volumes, among which her three autobiographical works—*Rasidi Ticket* (1976), *Lal Dhage Da Rishta*(1989) and *Hujre Di Mitti* are outstanding. Two books of her dreams, books on the works of Osho, the life and poetry of Sara Shagufja, and on the writing of Afzal Tanseef deserve special mention. She has been editor of *Nagmani*, a monthly magazine in Punjabi

Her work have been translated into 34 languages of the world. All her books are translated into Hindi and fourteen of them into English. If one were to make a selection from her works, *Amrita Pritam.Ki Sareshath Rachanaeye*, *Chune Hue Upnias*,(8 novels), *Chuni Hui Kahanian, Chuni Hui Kavitaen,* (all in Hindi, Bharatiya Jnanpith, New Delhi), *Kache Resham si Larki*(selected stories in Hindi, Kitab Ghar, Delhi), *Yeh Kalam Yeh Kagaz Ye Akshar* (selected works in Hindi, Rajpal and Sons, Delhi) *Selected Poems* (in English, Bharatiya Jnanpith), *A Slice of Life* (Vikas, Delhi), *Chonven Pattre* (selected works in Punjabi, Sahitya Akademi), *Mitti Di Zaat* (51 stories in Punjabi, Nigmani Publishrs, Delhi), *Amrita Vishesh* (selected works in Gujarati translation), *Kagaz Te Kanwaz*(collected poetry in Punjabi) would come up in a ready list.

Four films have been made on her life and works, and ten films and TV serials, based on her novels and short stories.

Amrita Pritam has travelled to Nepal, Yugoslavia, Hungary, Romania, Bulgaria, France, Norway, Russia and several Republics of the erstwhile Soviet Union, on invitation and as part of delegations and cultural exchange programmes.

After the Sahitya Akademi Award she received in 1956, several more came in search of her some of which are: International Vaptsarove Award, Cyril and Methodius Award by Republic of Bulgaria, and Bharatiya Jnanpith Award. Honoured with Padma Shri, D.Litt *honoris causa* by Delhi University, Jabalpur University, Visva-Bharati, Shanti Niketan, Punjab University, University of Bombay, Rabindra Bharati University, Kolkatta, the title of "Officer dens/order des arts et des letters" by the French Government, nomination as M.P., Rajya Sabha for six years, and this year by Padma Vibhushan, Amrita Pritam stands out as a unique literary personality in Indian literature.

Sahitya Akademi is honoured by conferring its highest honour, the Fellowship, on this charismatic writer, 'The Living Legend of Punjab', Amrita Pritam.